दिव्य कलाकृति / भौतिकता से दिव्यता की ओर
ब्र.कु.श्वेता, शान्तिवन

पात्र:
एक मूर्तिकार,
एक मूर्ति बना आधुनिक युवा

मूर्तिकार (मूर्ति देखते हुए) : वाह यह पत्थर कितनी सुंदर मूर्ति में ढल गया है। एक सुंदर नौजवान मूर्ति, बिल्कुल मेरी कल्पना अनुसार बना है। अब तो बस इस पर मेरा कार्य समाप्त होने को है।
(चारों तरफ से निहारता है, एक-दो जगह हाथ लगाता है) ठीक बन गया है। चलो थोड़ा रेस्ट कर लूं।
(लेटने की मुद्रा में) गहरी नींद में सो जाता है।
(कुछ आवाज सी होती है)

(स्वप्न में)
मूर्ति- हे मूर्तिकार, मेरी आवाज सुनो।
(मूर्तिकार उठता है)
मूर्तिकार: अरे किसने पुकारा, कौन है? (सामने देखता है)
कौन हो तुम? कुछ जाने-पहचाने देखे से लगते हो?
अरे, यह क्या, यह तो मेरी ही मूर्ति है, मेरी मूर्ति सजीव हो गई है। यह क्या, तुम तो सचमुच के मानव बन गये। आह, कितने अच्छे दिखते हो, मुझे बहुत खुशी हो रही है परंतु आँखों पर विश्वास भी नहीं हो रहा है।
मूर्ति: हे कलाकार, तुमने निःसंदेह मुझे बहुत सुंदर बनाया है पर मैं यह स्वरूप नहीं चाहता।
कलाकार: यह क्या कह रहे हो? आज के समय के अनुसार मैंने तो तुम्हें बहुत सुंदर मानव आकृति में ढाला है, अपने संपूर्ण कला-कौशल का प्रयोग करके तुम्हें बहुत सुंदर युवा स्वरूप प्रदान किया है। रूपवान, धनवान, पदवान, शक्तिवान तुम्हें देखकर ही लगता है..
मूर्ति: पर क्या चरित्रवान भी, गुणवान भी?
कलाकार: तुम कहना क्या चाहते हो?
मूर्ति: हे मूर्तिकार, मेरे इस स्वरूप में कहाँ है दिव्यता, कहाँ है दिव्य नेत्र, दिव्य मुसकान, दिव्य बुद्धि, दिव्य संस्कार..बस नज़र आती है बाहरी बनावट, चकाचौंध और अहंकार..मैं देव स्वरूप प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे देवमूर्ति बनना है..
कलाकार हैरान होकर : दिव्य मूर्ति, देव मूर्ति, अब कैसे हो सकता है..अब तो तुम मानव मूर्ति में ढल गये हो..
मूर्ति: हे कुशल रचनाकार! यह संभव है, जब चेतन मानव मूर्ति में यह हो रहा है तो जड़ मूर्ति में क्यों नहीं हो सकता? सर्वोच्च शिल्पी परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होकर विगत 75 वर्षों से यही कार्य कर

रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ कलाकार परमपिता परमात्मा है जो मानव मूर्ति को अपने पवित्र हस्तों का सहारा देकर देव मूर्ति में गढ देता है। ग्रंथ में लिखा है, मानव से देवता किये करत ना लागी वार..।

मूर्तिकार: मुझे विश्वास नहीं हो रहा?

मूर्ति: हाथ कंगन को आरसी क्या? आओ मैं तुम्हें ऐसे स्थान पर ले चलता हूँ जहाँ यह दिव्य कार्य परमात्मा श्रेष्ठ आत्माओं को निमित्त बनाकर कर रहे हैं।

मूर्तिकार: हाँ हाँ अवश्य चलिये, मैं भी चर्म चक्षुओं से उस अलौकिक दिव्य नजारे को देखना चाहता हूँ।

(पीछे लाल प्रकाश..गीत बज रहा है..योग चल रहा है..)

मूर्तिकार: यहाँ तो बहुत शांत व अलौकिक वातावरण है..लगता है जैसे किसी दूसरे लोक में पहुँच गये हैं..

मूर्ति (हँसकर)- दूसरे लोक में नहीं, दूसरे युग में जरूर पहुँच गये हैं..कलियुग अंत और सतयुग आदि के संगमयुग पर ये ब्रह्मावत्स स्वयं को पहचानकर स्वयं को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।

ये सभी परमात्मा से योगयुक्त हैं, इन्हें मानव से देव बनने का लक्ष्य स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने दिया है और वहीं इनके मार्गदर्शक और प्रेरक हैं।

मूर्तिकार: मुझे ये सब बातें रहस्यमय प्रतीत होती हैं..

मूर्ति: अब तो सब रहस्य भगवान ने खोल दिये हैं..ये नई दुनिया की रचना का समय है..इन्होंने भौतिक जीवन को त्याग योगी जीवन अपनाया है परमात्मा के नवविश्व के निर्माण के कार्य में भागीदार बनने के लिए... जो त्याग, तपस्या और समर्पणमयता के बिना संभव नहीं। एक तरह से इन्होंने अपने पत्थरयुक्त जीवन को ईश्वरीय हाथों में सौंप दिया है ताकि वह परम कलाकार उससे श्रेष्ठ मूर्ति गढ़ सके। ज्ञान के तीसरे नेत्र से लक्ष्य पर नजरे टिकाकर इन्होंने जीवन को पूर्णतया निर्विकारी और निर्व्यसनी बनाने का दृढ़ संकल्प लिया है।

मूर्तिकार: आहा! मुझे भी अपने जीवन को ऐसा सुंदर और दिव्य बनाना है...आहा! मुझे भी देव बनना है..मुझे भी देव बनना है............

(नींद से जग जाता है)

मूर्तिकार (इधर-उधर देखते हुए): यह क्या था..वो मूर्ति..अरे यह तो जड़ है..तो क्या यह स्वप्न था..पर वह स्थान कौन-सा था जहाँ मैं गया था..परमात्मा का कार्य चल रहा है..वाह! क्या देव प्रतिमायें थी..क्या मैं भी ऐसा बन सकता हूँ..अगर मुझमें ऐसी दिव्यता आ जाये तो मैं जो मूर्तियाँ बनाऊँगा वो भी कितनी दिव्य होंगी..

(ब्रह्माकुमारी का प्रवेश)

ब्रह्माकुमारी: मूर्तिकार भाई जी, हमारे यहाँ चैतन्य देवियों की झांकी का कार्यक्रम है..आपको हार्दिक निमंत्रण है..

मूर्तिकार: चैतन्य देवियाँ?

ब्रह्माकुमारी: हाँ..हाँ चैतन्य देवियाँ..वो जड़ मूर्तियाँ नहीं..हमने अपने जीवन का लक्ष्य ही यह लिया है..

मूर्तिकार: मुझे जिसकी तलाश थी..वो मुझे मिल गया..चलिये बहनजी..मुझे भी ऐसा बनना है..